Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com
ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000011

'भोलाराम का जीव' : वर्तमान समय का आकाशदीप

डॉ. मालदेए. कुछाडिया
आ.शिक्षक
स्टेशन प्लाट पे. कु. शाला
राणावाव (जि. पोरबंदर)

हरिशंकर परसाईजी हिंदी के पहले रचनाकार है, जिन्होंनेव्यंग्य को विधा का दराज्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिघि से उबारकर समाज केव्यापक प्रश्नों से जोड़ा है । उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी पैदा नहीं करती, परन्तु हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती है । जिन्हें किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना लगभग असम्भव है।लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते माध्यम वर्गीय मन की सच्चाईयों को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़ा है । सामजिक पाखण्ड और रुढ़िवादी जीवन मूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान-सम्मत दृष्टी को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है ।

हरिशंकर की रचनाएँ दिन-प्रतिदिन के जीवन मैं घटने वाली घटनाओं और जीवन के विविध क्षेत्रों में व्याप्त अंतर्विरोध की पड़ताल और पहचान कराती है । परसाईजी को आधुनिक युग का प्रतिनिधि रचनाकारकहा जाता है । समाज, राजनीति और हमारे धर्म संबंधी प्रसंग,घटनाए, स्थितियाँ, परिस्थितियाँ जो अभी तक साहित्य की दुनिया सेबाहर रक्खे जाते थेपरसाईजी ने इन्हीं की और हमारा ध्यान खिंचा है । 'भोलाराम का जीव' नामक इस रचना का मुख्य विषय भ्रष्टाचार किसी एक स्तर पर नहीं, पूरी की पूरी व्यवस्था में व्याप्तहै। चपरासी से लेकर बड़े-बड़े अफसर तक इस मामले में उनका पारस्परिक सहयोग देखते ही बनता है । समाजके विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करना प्रस्तुत रचना का उदेश्य है । यह एक प्रकार का रोग है जिसके प्रकोप कोहम सभी को किसी न किसी रूप में झेलना पड़ता है । यह रोग सभी विभागों मैं फैला हुआ है ।

वस्तुतःपरसाईजी की रचना 'भोलाराम का जीव' स्वातंत्र्योतर भारत में उभरी विसंगतियोंका चित्र है । स्वतंत्रता के बाद मूल्य तिरोहित होने लगे, समाजमें धन, पद और प्रतिष्ठा कीहोड़ बढ़ गई । राजनीतिक और अपराध का गढ़बंधन हो गया । देश के विकास के नाम पर अनेक योजनाएंबनीलेकिन उसका फायदा आम जनता को मिलने की बजायराजनीतिज्ञो, अफसरों और नौकरशाहों की तिजोरियाँभरने लगी । परिणाम स्वरुप आम जनता को अपना काम सरकारी कचहरियों में से निकलवाना मुश्किल बन गया । आज व्यक्ति अपनी फ़ाइल पर वजन रखते हैं, तब जाकर ही उसकीफ़ाइल आगे जाती है ; वरन नहीं । इस समस्या को परसाईजीने'भोलाराम का जीव' कहानी में खुद साहब नारदजी को कहते है कि।

"आप बैरागी दफ्तरों के रीति-रिवाज नहीं जानते । असल में भोलाराम ने गलती की । भईयह भी एक मंदिर है । यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है । आप भोलाराम के आत्मीय मालुम पड़ते है । भोलाराम की दरखास्तेंउड़ रही है । उन पर वजन रखीए।"[१]

ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000011

इनसे स्पष्ट होता है कि बिना लांच दिए काम होगा ही नहीं।

भोलाराम एक आम आदमी का प्रतिनिधित्वकरता है। जोपूरी जिंदगी नौकरी करने के बाद जबबुढ़ापे में पेंशन पाने के लिए सरकारी दफ्तरों में चक्कर काटते रह जाते है लेकिन पेंशन की फ़ाइल आगे नहीं जाती। और मृत्यु पर्यंत पेंशन के लिए भटकते है। मृत्यु के बाद जब उनकी आत्मा स्वर्ग में न पहुँचने पर खुद नारदजी उसकी तलासी लेते लेते सरकारी दफ्तरों में जाते है तो वहां पर ऑफिस में बड़े साहब फ़ाइल पर वजन की बात करते है। तब वह आगे कहते है कि वजन के रूपमें पैसों के आलावा कुछ भी चलता है – जैसे –

"मगर वजन चाहिए। आपकी यह सुन्दर वीणा है। इसका भी वजन भोलाराम की दरखास्त पर रखाजा सकता है। मेरीलड़की गाना बजानाशिखती है में उसे दे दूंगा। साधू संतो की वीणा से तो और अच्छेस्वर निकलते है।"[२]

इस से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में भी अपना काम निकलवाने के लिए कोई पदार्थ वजन के रूप में दे सकते है। यानी बीना वजन से काम संभव नहीं।

आज भोलाराम की भांति कई लोग अपना काम निकलवाने के लिए पूरीं जिंदगी अपनी फाइलों के निकाल के लिए राह देखते रहते है। आजहमारे पास मिडिया और माहिती का अधिकार सब कुछ होते हुए मानव लाचार बनता जा रहा है। उसे न चाहते हुए अपना काम निकलवाने के लिए कुछ न कुछ वजन के रूप में रखना पड़ता है।

अतःअंततः हम कह सकते है कि जिस प्रकार आकाशदीप समुद्र में आते-जाते जहाजों को संकेत देकर समुद्र में दिशा और स्थान का निर्देश देते है उसी प्रकार 'भोलाराम का जीव' कहानी भी आजके मानव को संकेत देते है कि आप इस भ्रष्ट समाज में अपना काम, अपने पेंशन की फाइलों को वजन देकर समय मर्यादा में पूर्ण करवा सकते है वरन भोलाराम की भांति मृत्यु के बाद भीपेंशन की फाइलें पूर्ण नहीं की जा सकती। अतःभ्रष्टाचार ही मानव-समाज का सबसे बड़ा दूषण है। जो हमारे प्रधानमंत्रीजी जैसे लोग राजनीती में आये तब जाकर दूर किया जा सकता है।

सन्दर्भ:

१) भोलाराम का जीव – हरिशंकर परसाईजी – पृ.२।

२) भोलाराम का जीव – हरिशंकर परसाईजी – पृ.३।

३) परसाई रचनावली – राजकमल प्रकाशन – नई दिल्ली।

४) हिंदी व्यंग्य के प्रतिमान, डॉ. बालेन्द्र शेखर तिवारी, गिरिनार प्रकाशन, महेसाणा।

५) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, परसाईजी, ज्ञान भारती प्रकाशन – दिल्ली।

६) आधुनिक हिंदी हास्य व्यंग्य, केशवचंद्र वर्मा – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।